Volume-7, No. 1 Feb.-2020, pp. Hin.39-42

सतनामी साध सम्प्रदाय के दार्शनिक विचार

डॉ0 रामेन्द्र रमण शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय,
गभाना अलीगढ उत्तर–प्रदेश भारत।

संत काव्य परम्परा में सतनामी साध सम्प्रदाय' समय की दृष्टि से विचारणीय एवं शोध–दृष्टि से व्यापक है। 'सतनामी साध सम्प्रदाय' की साधपुरा (राजस्थान) एवं रुकनपुर (उ0प्र0) शाखा के मूल प्रवर्त्तक सतगुरु बाबा सबलदास जी है। संवत् 1187 की चैत्र सुदी चतुदर्शी शनिवार को सतगुरु बाबा सबलदास जी व उनकी चरण सेवा और चंवर डुलाते हुए उनके प्रिय शिष्य नितानन्द जी साहिब खंडेला जनपद सीकर (राजस्थान) में प्रकट हुए। **'चैत्र सुदी चौदस भई, वार शनिचर बार। भोपति के डेरा कियो, दियो भगत परिवार।।'** बाबा सबलदास ने भोपति, रूस्तम, सॉवल व खेमू साध को उपदेश दिया। अज्ञान मिटाकर 'शब्द ब्रह्म' की साधना करता है, वह साध कहलाने का सच्चा अधिकारी बनता है–'कुबुधि कूॅमार सबद घर बैठो, तब कोई साध कहा संवेगो सतकी नाम धरम का बेड़ो तो कोई मति की डंडी लगावेगो.....। कहे जी 'सबलदास' इतनी सी साधौ, तो अमरापुर कूॅ पावेगो। बाबा सबलदास जी ने शिष्य नितानंद को आशीर्वाद दिया कि 'जो करामात मैं हूॅ, वहीं करामात तू है।' इसलिए साध चेताने का कार्य करो।

मुख्य शब्द– साध, सम्प्रदाय, मुक्ति, मोक्ष, करामात।

खंडेला के तत्कालीन राजा के कदाचार से क्षुब्ध होकर बाबा नितानंद ने खंडेला का परित्याग कर दिया तथा कई वर्षों तक साध संगत के साथ भ्रमण करते रहे। संवत् 1287 में अरावली पर्वत माला के पूर्वी दिशा में साधपुरा में एक आश्रम बनाया। जहॉ उन्होंने दीर्घकाल तक तप एवं साधना की। जनश्रुति है कि साधना के उपरान्त गुफा में प्रवेश करते ही शिवरात्रि संवत् 1407 में अन्तर्ध्यान हो गए। उनकी तपोभूमि के गुफाद्वार को संवत् 1746 में आच्छादित कर दिया गया।

बाबा सबलदास व बाबा नितानंद के अनुयायी एवं सतनामी साध सम्प्रदाय की रूकनपुर शाखा के संस्थापक सतगुरू बाबा कायम कुॅवर साहब जी साधपुरा (राजस्थान) से 60 कोस दूर उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद अलीगढ का भ्रमण करते हुए अरनियॉ तहसील खुर्जा जिला–बुलन्दशहर में एक रात्रि विश्राम करके निकटवर्ती गॉव रूकनपुर में संवत् 1348 को पहुॅचे । वहॉ घास, फूॅस का बंगला बनाया और संवत् 1355 तक रहे। रूकनपुर के नबाबी सल्तनत श्री सांवलशाह ने उन्हें भूमि दे दी। इस प्रकार संवत् 1356 में मन्दिर एवं गुरु गद्दी का निर्माण हो गया। उसी समय से सतगुरु गद्दी की परम्परा का निर्वाह अद्यतन हो रहा है। साधपुरा–राजस्थान की तपोभूमि गद्दी पर चौदहवें सतगुरु बाबा उमेश दास जी और रूकनपुर (उ0प्र0) की करामाती गुरु गद्दी पर अटारहवें सतगुरु बाबा सुदेश चन्द्र जी पदासीन है। सतनामी साध सम्प्रदाय हिन्दी साहित्य के इतिहास से वंचित रहा, क्योंकि सतगुरुओं में पोथियों के प्रति गोपनीयता रखी।

सतनामी साध सम्प्रदाय की गुरु गद्दियों पर अनेक प्रकार की धार्मिक साधनाऍ मिलती है। विघटनकारी नीतियों से क्षुब्ध संतों ने आध्यात्मिक एकता, सामाजिक भावना और जीवन की सोद्देश्यता को नये मूल्य दिये।

दर्शन' शब्द का प्रयोग मनीषियों ने 'उस विचार पद्धति' के लिए किया है, जिसकी प्राप्ति तो अन्तर्दृष्टिजन्य अनुभव से होती है, पर जिसकी पुष्टि तार्किक प्रमाण द्वारा होती है। किन्तु शंकराचार्य के अनुसार 'दर्शन' की उत्पत्ति क्या होना चाहिए, में नहीं अपितु क्या है, इसके बोध ग्रहण में है।

सतनामी साध–संसार माया है, रामनाम सत्य है, सत अवगत, सतनाम सतनाम, जैसे दार्शनिक वाक्य बोलते हैं। इनके काव्य में दार्शनिक तत्व विद्यमान है, जो पाश्चात्य 'फिलोसफी'' शब्द के पर्यायवाची न होकर भारतीय दर्शन की अनुभूति प्रधान हैं। सतनामी साध सम्प्रदाय के सतगुरुओं सबलदास जी, नितानंद जी व

कायम कुँवर जी आदि ने ब्रह्म, जीव, जगत्, माया और मोक्ष के विषय में जो कहा है, वह तर्कवाद या बौद्धक चिंतन नहीं है, अपितु उसका आधार उनकी अनुभूति है।

जनश्रुति के आधार पर सतनामी साध धर्म प्राचीनतम है, सृष्टि रचना से पूर्व परमेश्वर अवगत मेहरवान सम्पूर्ण ब्राह्मण्ड को स्वयं में समाहित किये हुये थे। इन्हीं की क्रियात्मक इच्छा से सृष्टि की रचना हुई। ओंकार आकाश, जल, थल, पवन, सूर्य, चन्द्र, तीन गुण माया, जीव, और वनस्पति आदि अस्तित्व में आये। तब पॉच तत्व, तीन गुण से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना कर चौरासी लाख योनियों में जल, थल, नभचर व अचर जीवों का सृजन किया।

'आदि पुरुष एक किया विचारा, लख चौरासी धागा डाला।
पॉच तत्व से गूदड़ी बीनी, तीन गुनन से ठाड़ी कीनी।।
तामें जीव ब्रह्म औ माया, समरथ ऐसा ख्याल बनाया।

'ब्रह्म' शब्द 'ब्रह्म' में 'मनिन' प्रत्यय के योग ब्रह्म+मनिन् से बना है, जो पुल्लिंग है, जिसका अर्थ है– एक मात्र चेतन, नित्य और मूल सत्ता, जो अखण्ड, अनंत, अनादि, निर्गुण और सत्–चित्–आनन्द से युक्त कही जाती है, जिसे ईश्वर, परमात्मा, अन्तरात्मा और विवेक कह सकते हैं। सतनामी साध साहित्य में ब्रह्म का निरुपण निर्गुण, सगुण और सगुण–निर्गुण मिश्रित तीनों रूपों में किया गया है।

सतनामी साध धर्म में ब्रह्म का निराकर एवं निर्गुण रूप में माना है। परमात्मा की कोई मूर्ति या प्रतिमा नहीं है। वह तात्विक एवं अशरीरि, काया रहित है। क्योंकि उसके अपने गुण कर्मों के लिए जड़–शरीर की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा अजन्मा, अनादि, सर्व–व्यापक, सृष्टा, अन्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, निर्विकार, निराकार, अगोचर, अगम, अविनाशी इत्यादि है। 'अवगत अगम अपार है, कोई न पायो पार।' ब्रह्म एक ही है और मानव जाति का एक ही उपास्य है। सतनामी साध धर्म दर्शन 'एकेश्वरवादी' है। सतनामी सतगुरु नितानंद साहिब की वाणी में उल्लिखित है–

'दुनिया बाकूँ सहस्र बतावै, हमने एक ही देखा।
एक सूँ एक अनेक सूँ एका, देमि देखिम विवेका।।

सगुण रूप में व्यक्ति विशेष, अवतारी पुरुष, धातु या पत्थर की मूर्ति, प्रतिमा अथवा प्रतीक के रूप में किया जाता है, परन्तु उसमें प्रतिष्ठित अमूर्त ब्रह्म ही तो होता है। यह अमूर्त ब्रह्म ही निर्गुण रूप है। सतनामी साध–धर्म दर्शन का यह 'निरुपाधिध्येय' सिद्धान्त है। सतनामी सतगुरु नितानंद जी साहिब का विलक्षण विवेचन है–

'मूरति माहि अमूरति खेले, बाकी में बलिहारी।

संतों के मतानुसार आत्मा जब शरीर के संयोग से इन्द्रियों के अधीन होकर अपने को भूल जाती है, तभी जीव कहलाती है। संत गुरु रविदास कहते हैं कि आत्मा और परमात्मा अभेद है। उनमें जो भेद दिखाई देता है, वह भ्रम के कारण है। पलटूदास ने भी ब्रह्म और जीव की एकता का समर्थन किया है–'जोई जीव सोई ब्रह्म एक है, दृष्टि अपानी चर्मा।' इस प्रकार संतों के विचार उपनिषद और गीता से पर्याप्त साम्य रखते हैं।

सतनामी साध दर्शन के अनुसार यह मानव देह महान है। अवगत आराधना के लिए उच्चतर मंदिर है। तर्क रूप में कोई कह सकता है कि प्रत्येक जीव (प्राणी) एक मंदिर है, किन्तु मनुष्य सबसे श्रेष्ठ मंदिर है।

सतगुरु बाबा कायम कुँवर जी कहते हैं–

साधों भाई जिनके दिल में दोसरी,
जिनंकू घर कैसो।

संतो के सैद्धान्तिक दृष्टि से जगत् को भ्रम, मिथ्या, स्वप्नवत्, निषेधात्मक एवं माया का प्रपंच माना है और व्यावहारिक दृष्टि से जगत् को ब्रह्म की लीला, ब्रह्म का रूपान्तरण मानकर कार्य क्षेत्र माना है। संत दादू 'जगत् बाजीगर की बाजी, कहा है। संतों ने जगत् को मिथ्या कहकर भी उससे पलायन की बात नहीं की है। अपितु सांसारिक कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए परमतत्व प्राप्ति का प्रयास करता रहा है।

सतनामी साधो की जनश्रुति के आधार पर 27 बार पृथ्वी नष्ट हो चुकी है। अवगत मेहरवान के साथ जगत की विलय लीला को स्वीकार करते हैं। प्रकृति में बहिर्जगत अस्थायी, नश्वर एवं परिवर्तशील है। सतनामी साध सम्प्रदाय के संतजन अन्तर्जगत धारणा को महत्व देते हैं अन्तर्जगत में अन्तर्मानव विद्यमान है। अन्तर्जगत का क्रम है कि वह स्थूल से सूक्ष्म , सूक्ष्म से सूक्ष्मतम रूप में पाया जाता है। अन्तर्जगत स्थिति आत्मा स्वतः प्रकाश, सच्चिदानंद, चिन्तनमय एवं मुक्त है। सामल साध का कथन है कि मानव चैतन्य के अभाव में भ्रम में डूबा रहता है, इसलिए संसार को समझ नहीं पाता है।

अब हू चेति समझ मन मेरा, या ओसर में भली बनी।
झूठे जगत भ्रम सू लाग्यो, सच्चा सुमिरौ एक धनी।

'माया' ब्रह्म की शक्ति के रूप में है। ब्रह्म में यह उसी रूप में समाई हुई है, जिस प्रकार अग्नि में उसकी दाहिका शक्ति। इसके दो भेद हैं–एक विद्या तथा दूसरा अविद्या। सृष्टि का निर्माण, उसकी स्थिति तथा अन्ततोगत्वा उसका प्रलय के रूप में अवसान हो जाना माया के विद्या रूप का कार्य है।

माया का अविद्यात्मक रूप ही नियति का चक्र माना गया है, जो दुःख रूपा होता है। विद्या और अविद्या का विवेचन सत् एवं असत् रूप में विलक्षण है। संसार

में माया के अनेक रूप हैं, यह त्रिगुणात्मक है। माया, ईश्वर और जीव दोनों के साथ लगी रहती है। ईश्वर माया को वश में रखता है किन्तु माया जीव को वश में कर लेती हैं। संतों ने माया के अविद्यात्मक रूप का अधिक वर्णन किया है। उसे ब्रह्मोपासना में बाधक माना है। संत माया को नाग, नागिन, डाइन, ठगिनी, नटिनी, हुरी, दलहिन, जेठानी, बुढ़िया, ठकुरानी, माप, चेरी, दासी, चक्की आदि अनेक प्रतीकों से व्यक्त करते हैं। माया मन और देह में बसती है, जब तक तपस्या करके परमब्रह्म में ध्यान नहीं लगाया जाता है, तब तक उससे मुक्ति नहीं मिलती –

सब माया मांहि है, बसे काया गठ मांहि।
तपस्या करि करि फलकूँ चाहें, जब लग बरकत नांहि।।

अवगत मेहरवान की दैनिक साधना, सतगुरु मंत्र व सत–अवगत जप, कुण्डलिनी शक्ति योग की क्रिया में संलग्न कर साधना पथ पर अग्रसारित करना तथा सत्य स्वरूप अवगत से एकाकार कराने तक पहुँचाना। सतनामी साध दर्शन में माया के बंधन से मुक्त कराना सतगुरु द्वारा साध चिताने का सोपान है।

भारतीय चिन्तकों की दृष्टि में यह दृश्यमान जगत चरम सत्य और इन्द्रिय सुख ही परमसुख नहीं है। सभी विचारधाराओं का उद्देश्य एक ही है–

दुःख से मुक्ति और नित्य आनन्द की उपलब्धि।

मध्यकाल में युगद्रष्टा, आत्मचेता सन्तो ने 'मुक्ति क्या है? मुक्तावस्था क्या है? तथा यह मुक्ति किन साधनों से संभव है? विषय पर अनुभव के आधार पर चिन्तन किया हे। संत पलटूदास साहब कहते हें–

मुक्ति–मुक्ति सब खोजत हैं, मुक्ति कहो कह पाइये जी।
मुक्ति के हाथ पांव नहीं, किस भांति सेती दिखलाइये जी।।

देहांतर में आत्मा एक जीव से छूटकर (मुक्त होकर) दूसरे जीव की पकड़ में चली जाती है, पुनः जीवात्मा बन जाती है। जन्म–मृत्यु की क्रिया में बनी रहती है। दार्शनिक प्रश्न यह है कि किस प्रकार इस जन्म–मृत्यु की क्रिया का अन्त किया जाय। सतनामी साध दर्शन में समाधान दिया गया है। अवगत मेहरवान को कोई भी साध जान लेता है, तो वह जन्म–मृत्यु से मुक्त रहता है। आत्मा का परमात्मा में विलीन होना मुक्ति है' जैसे समुन्द्र में जल की एक बूँद डाले, वह उसी में विलीन हो जाती है, वैसे ही लघु रूप आत्मा वृहद्रूप परमात्मा में मिलकर उसी में विलीन हो जाती है। इस प्रकार आत्मा–परमात्मा का एकत्व धारण कर लेना निर्वाण पद मुक्ति है।

जो कोई चाहे मुक्तिद्वार, छोड़ो काम, क्रोध, अहंकार।
लोभ, मोह, धीरज से मारो, आशा, तृष्णा चित् नहीं धारो।।
दयाभाव हृदय में राखों, अस्तुत निन्दा दोऊ नाशो।
अवगत के घर तब ही पाओ, तज अभिमान दीन बन जाओ।।

सतनामी साध धर्म में करामात पूर्ण आध्यात्मिक शक्ति के रूप में प्रयुक्त है। शब्दकोषीय अर्थ– चमत्कार, प्रभाव, कौशल, निपुणता इत्यादि है। अत्यन्त सामान्य स्थिति में साधजन इसे 'ब्रह्म कौशल' कहते हैं। सतगुरु बाबा सबलदास जी साहिब ने करामात को ही 'ईमान की तेग' की संज्ञा दी है। इसके भाव व अर्थ में सतनामी साधो की अगाध आस्था है। इसका आध्यात्मिक–निरुपण इस प्रकार किया जा सकता है–

अवगत आप कियौ प्रतिपाल, दया करी प्रभु दीनदयाल।

बाबा कायम कुँवर जी कहते हें– मानव जाति का एक मात्र उपास्य परमब्रह्म परमेश्वर है। सतनामी साध धर्म में परमब्रह्म को 'अवगत मेहरवान' कहते हैं। सतगुरु बाबा जी नितानंद साहिब ने ब्रह्म के मूल तत्व को स्थापित किया है–

एक हमने देखा राम विचारा, जाकौ रमि रहियो सकल पसारा।

करामात का शब्द कोषीय अर्थ चमत्कार भी है। वस्तुतः कलियुग में लोगों को बिना चमत्कार के यथार्थ शक्ति पर विश्वास नहीं आता। मनुष्यों को परचा (चमत्कार) मिलते ही परम शक्ति पर विश्वास हो जाता है।

निष्कर्ष–

संत साहित्य के रचनाकारों ने स्वयं के दार्शनिक होने का दावा नहीं किया । संत कवियों ने किसी दर्शन विशेष के अनुसार अपने सिद्धांतों को प्रतिपादित करने का भी प्रयास नहीं किया। किन्तु सतनामी साध सम्प्रदाय में सतगुरु बाबा सबलदास जी, नितानंद जी एवं कायम कुँवर जी ने निर्गुण निराकार 'अवगत मेहरवान' के दर्शनिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया हे। सतनामी साध सम्प्रदाय में ब्रह्म, आत्मा, जगत्, माया, मोक्ष एव करामत के विचार भारतीय दर्शन पर आधारित है। इनका ब्रह्म निर्गुण, निराकार, अजन्मा, अनादि, सर्वव्यापक है। जीव मानव देह के साथ विकृत हो जाता है तब सतगुरु ही साधक को परमार्थ–पथ की ओर अग्रसारित करते हैं। सतनामी साध सम्प्रदाय में जगत् इन्द्रिय ग्राह्य है, जिसकी अभिव्यक्ति 'शब्द–ब्रह्म' के रूप में होती है। अतः ब्रह्म ही जगत का नियंता है। माया ब्रह्म की त्रिगुणात्मक शक्ति है। संतों ने नागिन, डाइन, ठगिनी आदि प्रतीकों से व्यक्त किया है। आत्मा और परमात्मा का विलीन होना ही मुक्ति या मोक्ष है। सतनामी साध

सम्प्रदाय में अमरापुरी अर्थात् करामात का भी विधान है। इस प्रकार का करामात सम्पन्न पुरुष ही सतगुरु होता है। यह करामात अर्थात् ब्रह्म कौशल से साध चेतना का कार्य करता है। सतगुरु बाबा सबलदास जी ने नितानंद जी को और यह नितानंद जी ने कायमकुँवर जी को करामात सौंपी थी। जो साधपुरा (राजस्थान) व रुकनपुर (उ0प्र0) परिक्षेत्र में आज भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ सूची

1. सतनामी ग्यान सागर, सं0 सतीश साध, लेजर टाइप सैटिंग, पुनीत कम्प्यूटर्स, ई–10 प्रैस पेलेस, नई दिल्ली–2, प्रथम संस्करण कार्तिक पूर्णिमा संवत् 2055, पृष्ठ–10
2. सतनामी ग्यान सागर, सं0–सतीश साध , पृ0–10
3. सतनामी साध समाज ज्ञान पुस्तिका, सं0 गजेन्द्र कुमार शर्मा, एफ–4 –2002 साउथ एण्ड अपार्टमेंट, इरोज गार्डन, फरीदाबाद (हरियाणा) (2 जून, 2008), पृष्ठ–15
4. सतनामी ज्ञान गंगा, सं0 वेद प्रकाश गोयल, 'वेद' 1/1975 ईस्ट राम नगर, शाहदरा दिल्ली–32, शरद पूर्णिमा संवत्–2066, पृष्ठ–111
5. भारतीय दर्शन (भाग–1) डा0 राधाकृष्णन, राजपाल एण्ड संस्, दिल्ली, पृ0–37
6. भारतीय दर्शन (भाग–2), पृष्ठ–614
7. सतनामी ग्यान सागर, पृ0–2
8. मानक हिन्दी कोष, रामचन्द्र, खण्ड–4 , पृ0–179
9. सतनामी ग्यान सागर, पृ0–3
10. हिन्दी सन्त साहित्य के स्रोत, डॉ0 विनीता कुमारी, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004, पृष्ठ–147
11. सतनामी ग्यान सागर, पृ0–67
12. हिन्दी सन्त साहित्य के स्रोत, डा0 विनीता कुमारी, पृ0–153
13. सतनामी ग्यान सागर, पृ0–170
14. संत कवि देवकी नंदन साहब और उनकी रचनाएँ, पं0 परशुराम चतुर्वेदी, पृ0–142–143
15. सतनामी ग्यान सागर, पृ0–77
16. सतनामी ग्यान सागर, पृ0–28
17. सतनामी साध समाज, सं0 भानु प्रकाश शर्मा, पृ0–36
18. संत साहित्य के प्रेरणा–स्रोत, परशुराम चतुर्वेदी, राज्यपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1982, पृ0–26